वृहदीश्वर मंदिर

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

चोल राजवंश का इतिहास दक्षिण भारत के इतिहास में जिस प्रकार से महत्वपूर्ण है उसी प्रकार से चोलो का कला और स्थापत्य का भी उतना ही महत्व है| वृहदीश्वर मंदिर चोलो की अनुपम देन है| जिसका निर्माण चोल राजवंश के यशश्वी राजा राजराजा प्रथम ने लगभग सन 1000 ई० में निर्माण करवाया था| चोल स्थापत्य शैली का गौरवमय उदाहरण तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर है| चेन्नई से लगभग दो सौ मील दक्षिण-पश्चिम तंजोर नामक स्थान में यह शिव मंदिर अवस्थित है|

Fig - 1 वृहदीश्वर मंदिर तंजोर

यह मंदिर चहारदीवारी से घिरे प्रांगण में निर्मित है| यह प्रांगण 500 फुट लम्बा तथा 250 फुट चौड़ा है| इस आयताकार प्रांगण के आगे एक और वर्गाकार प्रांगण है, जिसकी प्रत्येक भुजा 250 फुट की है| इसी आयताकार प्रांगण में गर्भगृह, स्तम्भयुक्त मंडप, नंदी मंडप तथा एक विशाल सभा-कक्ष है| मंदिर में प्रवेश के लिए दो गोपुरम है| गर्भगृह के

चारो ओर 9 फुट चौड़ा मार्ग है, जो प्रदक्षिणा-पथ है| आग्नेय प्रस्तर से निर्मित इस मंदिर की आधारभूमि में अनेक अभिलेख उत्कीर्ण है| लेकिन सबसे सुन्दर इस मंदिर का शिखर है| यह देवालय के पश्चिमी छोर पर निर्मित है, जो आकर्षण का प्रमुख केंद्र है| विभिन्न अंगों की सादगी ही इसकी मूल विशेषता है| इसका शिखर 190 फुट ऊँचा है| सम्पूर्ण शिखर तीन भागों में नियोजित है- आधार भाग, ढलुवा भाग और अंडाकार स्तूपिका|

शिखर के आधार भाग की योजना वर्गाकार है,जिसकी प्रत्येक भुजा 82 फुट की है| यह 50 फुट ऊँचा है| शिखर का ढलुवा भाग तेरह परतो में बना है| इस शिखर के शीर्ष की बनावट विशिष्ट है| यह अंडाकार स्तूपिका की आकृति का है| शिखर के सम्पूर्ण सतह में भव्य अलंकरण है|

वृहदीश्वर मंदिर की अलंकृत मूर्तियाँ कला की दृष्टी से महत्वपूर्ण है| मंदिर के भीतरी दीवारों पर नृत्य की 108 भंगिमाओं में नटराज की मूर्तियाँ अंकित है| स्वयं राजराजा प्रथम और उनकी महरानी लोकमहादेवी की मूर्तियाँ भी है| गर्भगृह की उत्तरी, पश्चिमी तथा दक्षिणी दीवारों पर शिव की विशालकाय मूर्तियों का अलंकरण है| गर्भगृह के प्रदक्षिणा पथ में प्रकाश का सर्वथा आभाव है| गर्भगृह के भीतर एक विशाल शिवलिंग प्रतिष्ठित है| तंजोर का यह विशाल मंदिर चोल नरेशों की कलात्मक अभिरुचि का ज्वलंत प्रमाण है| यह मंदिर उनके अतुल्य वैभव एवं

अपरिमित शक्ति का परिचय देता हैं| मंदिर के विशेष तौर पर अध्ययन करने से शिल्पियों की निपुणता, कार्यक्षमता और अनुभव का परिचय मिलता है| क्योकि निश्चय ही इस विशाल मंदिर को बनाने में एक कुशल नेतृत्व का हाथ रहा होगा| यह मंदिर चोल साम्राज्य की समृद्धि का प्रतिक है|